॥ श्रीवेङ्कटेश करावलम्बन स्तोत्रम् ॥

श्री शेषशैलसुनिकेतन दिव्यमूर्ते
नारायणाच्युत हरे नळिनायताक्ष ।
लीला कटाक्ष परिरक्षित सर्वलोक
श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ १ ॥

ब्रह्मादिवन्दितपदाम्बुज शङ्खपाणे
श्रीमत्सुदर्शन सुशोभित दिव्यहस्त ।
कारुण्यसागर शरण्य सुपुण्यमूर्ते
श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ २ ॥

वेदान्तवेद्य भवसागरकर्णधार
श्रीपद्मनाभ कमलार्चितपादपद्म ।
लोकैकपावन परात्पर पापहारिन्
श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ३ ॥

लक्ष्मीपते निगमलक्ष्य निजस्वरूप
कामादिदोषपरिहारक बोधदायिन् ।
दैत्यादिमर्दन जनार्दन वासुदेव
श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ४ ॥

तापत्रयं हर विभो रभसा मुरारे

संरक्ष मां करुणया सरसीरुहाक्ष ।

मच्छिष्यमित्यनुदिनं परिरक्ष विष्णो

श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ५ ॥

श्रीजातरूप नवरत्नलसत्किरीट-

कस्तूरिका तिलकशोभि ललाटदेश ।

राकेन्दुबिम्ब वदनाम्बुज वारिजाक्ष

श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ६ ॥

वन्दारुलोक-वरदान-वचोविलास

रत्नाढ्यहार परिशोभित कम्बुकण्ठ ।

केयूररत्न सुविभासि-दिगन्तराल

श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ७ ॥

दिव्याङ्गदाङ्कित भुजद्वय मङ्गलात्मन्

केयूरभूषण सुशोभित दीर्घबाहो ।

नागेन्द्र-कङ्कण करद्वय कामदायिन्

श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ८ ॥

स्वामिन् जगद्धरणवारिधिमध्यमग्न

मामुद्धराद्य कृपया करुणापयोधे ।

लक्ष्मींश्च देहि मम धर्म समृद्धिहेतुं

श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ९ ॥

दिव्याङ्गरागपरिचर्चित कोमलाङ्ग

पीताम्बरावृततनो तरुणार्क भास

सत्कांचनाभ परिधान सुपट्टबन्ध

श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ १० ॥

रत्नाढयदाम सुनिबद्ध-कटि-प्रदेश

माणिक्यदर्पण सुसन्निभ जानुदेश ।

जङ्घाद्वयेन परिमोहित सर्वलोक

श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ११ ॥

लोकैकपावन-सरित्परिशोभिताङ्घ्रे

त्वत्पाददर्शन दिने च ममाघमीश ।

हार्दं तमश्च सकलं लयमाप भूमन्

श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ १२ ॥

कामादि-वैरि-निवहोच्युत मे प्रयातः

दारिद्र्यमप्यपगतं सकलं दयालो ।

दीनं च मां समवलोक्य दयार्द्र दृष्ट्या

श्री वेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ १३ ॥

श्री वेङ्कटेश पदपङ्कज षट्पदेन

श्रीमन्नृसिंहयतिना रचितं जगत्याम् ।

ये तत्पठन्ति मनुजाः पुरुषोत्तमस्य

ते प्राप्नुवन्ति परमां पदवीं मुरारेः ॥ १४ ॥

॥ इति श्री शृङ्गेरि जगद्गुरुणा श्री उग्रनृसिंह भारति स्वामिना रचितं श्री वेङ्कटेश करावलम्बन स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

This beautiful hymn is a composition of Sri Sri Ugra Nrsimha Bharati Mahaswamigal of Sri Sringeri Sharada Peetham. When Mahaswamigal visited Tirumala, the shrIvaiShNava priests there objected to his worshipping the Lord as he was a smArta sannyAsi. Mahaswamigal, who due to decades of Ugra Nrsimhopasana was of the form of Sri Nrsimha himself, prayed to Sri Venkatesha and the Lord is said to have roared as a lion to indicate his Nrsimha Swarupa. The priests sought his forgiveness and Mahaswamigal worshipped the Lord with his lotus hands and blessed the world with this sacred hymn, reciting which brings on one, the grace of Sri Venkateshwara.

Sri Kamakoti Mandali [srigurupaduka@yahoo.com]